www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ३७ ● १३ सितम्बर, २०१६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी सम्वत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

गोमती तट पर उमड़ा आर्यों का जन सैलाब

"आर्य समाज का एक ही नारा। शराब मुक्त हो प्रदेश हमारा।।

सम्पूर्ण प्रदेश में शराब बन्द करने तक आंदोलन जारी रहेगा–देवेन्द्रपाल वर्मा

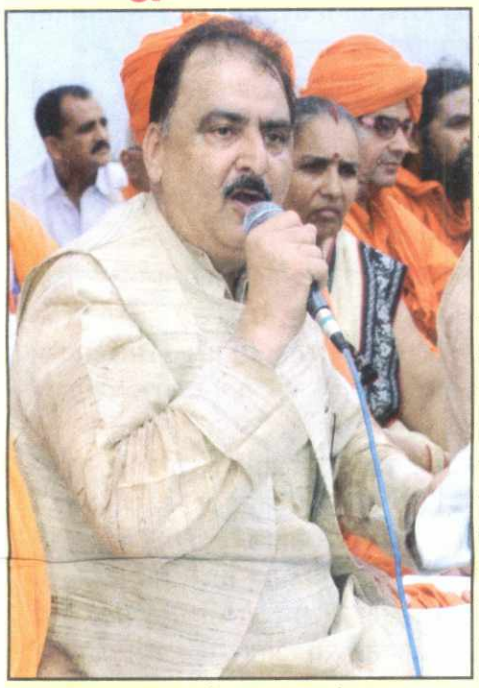

लखनऊ आर्य समाज के इतिहास में पहली बार उ.प्र. में पूर्ण शराब बंदी आन्दोलन के समर्थन में सम्पूर्ण उ.प्र. की आर्य समाजों, गुरूकुलों व शिक्षा संस्थानों आदि से सन्यासीगण, आर्यजन, ब्रह्मचारीगण तथा महिलाओं आदि ने हजारों की संख्या में एक जुट होकर उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी लागू करने के लिए विशाल धरना दिया।

प्रातः ८:०० बजे गोमती के सुरम्य तट पर लक्ष्मण मेला मैदान, लखनऊ में सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द स्वामी यज्ञ मुनि जी व स्वामी विश्वानन्द जी के संयुक्त ब्रह्मत्व में सरकार की बुद्धि-शुद्धि के लिए वेद मंत्रों के सास्वर पाठ के साथ यज्ञ प्रारम्भ किया गया। यज्ञ में स्वामी सौम्यानन्द जी दिल्ली, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, महात्मा राममुनि जी (सभी मथुरा से), स्वामी रामानन्द जी, महात्मा नन्द मुनि जी, महात्मा प्रेम मुन जी, स्वामी सर्वानन्द जी (सभी आगरा से) स्वामी निर्भयानन्द जी (हाथरस), महात्मा आनन्द यती जी (नरौरा) स्वामी महेश योगी (शाहजहांपुर) आदि उपस्थिति थे। इसके अलावा उप प्रधान डॉ. धीरज सिंह, श्री रामचन्द्र सिंह, उप मंत्री डॉ. शैलेन्द्र जी, (पूर्व सांसद) श्री आनन्द कुमार (अवकाश प्राप्त आई.जी.), डॉ. धीरज सिंह (उप प्रधान) स्वामी धर्मेश्वरानन्द (मंत्री) आदि ने अपने जोशीले वक्तव्यों से सम्बोधित किया।

अन्त में सभा प्रधान श्री विशाल सिंह, श्री रूद्रपाल आर्य, श्रीमती गिरजा त्रिपाठी, श्री पंकज जायसवाल, श्री सुनील कुमार, सहायक कोषाध्यक्ष, ज्ञानेन्द्र सिंह ज्ञानी, पुस्तकाध्यक्ष श्री रमा शंकर आदि सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री तेजपाल सिंह, प्रति. सदस्य चौधरी रणवीर सिंह, डॉ. भानु प्रकाश आर्य, श्री बेचन सिंह, सहयुक्त सदस्य, अन्तरंग सदस्य उ.प्र. की समस्त आर्य समाजों से पधारे आर्य जन, ब्रह्मचारी गण, शिक्षण संस्थानों के अध्यापक-अध्यापिकाओं सहित लगभग दस हजार से ज्यादा व्यक्ति उपस्थित थे।

यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् सभा आरम्भ हुई जिसका संचालन श्री रवि शास्त्री (बागपत) ने किया। सभा को श्री वीरपाल जी, डॉ. नन्दिनी खन्ना, श्रीमती गिरजा त्रिपाठी उ.प्र. श्री हर प्रसाद शास्त्री आचार्य धर्मवीर जी, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज के छटे नियम का उल्लेख करते हुए कहा कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आज आर्य समाज ने यह आन्दोलन उ.प्र. में पूर्ण शराब बन्दी के लिए गत दो माह से चला रखा है। आज हमारे नव युवक नशे व शराब के आदी हो रहे हैं सरकार की दोगली नीतियों के चलते महिलायें व बच्चे असुरक्षित हैं। अपराधों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। सरकार का राजस्व हानि का ढिंढोरा पीटना गलत व तथ्यहीन है क्योंकि शराब पीकर होने वाले अपराधों की रोकथाम दुर्घटना मुआवजा आदि पर खर्च इससे ज्यादा होता है।

सभा प्रधान ने आगे कहा कि आर्य समाज सदैव से ही सामाजिक बुराइयों से लड़ता रहा है अब उ.प्र. को दूसरा पंजाब, आर्य समाज नहीं बनने देगा। गत् माह अगस्त में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के तत्वावधान में उ.प्र. की समस्त आर्य समाजों ने एक साथ मिलकर तहसील व जनपद स्तर पर ज्ञापन मा. मुख्य मंत्री को सम्बोधित करते हुए सौंपा था जिस पर कोई कार्यवाही शासन ने नहीं की है। अतः मजबूर होकर पूर्व घोषित कार्यक्रम के अन्तर्गत आज ०६ सितम्बर को हम सभी आर्य लोग शासन की कुम्भकर्णीय नींद जगाने के लिए इकट्ठा हुए हैं।

सभा प्रधान जी ने धरना स्थल पर एकत्रित पत्रकार बन्धुओं के सवालों का उत्तर देते हुए कहा कि आर्य समाज कोई राजनीतिक दल नहीं है, समाज की खुशहाली ही सर्वोपरि है। यदि सरकार शीघ्र ही कोई कदम शराब बन्दी के लिए नहीं उठाती है तो आर्य समाज उ.प्र. के गाँव-गाँव, तहसील, ब्लाक व जनपद स्तर पर पंचायतों व समाजों आदि के माध्यम से लोगों को जागरूक करेगा और प्रदेश में शराब बन्द करा कर ही चैन से बैठेगा। सभा प्रधान ने सारे उ.प्र. की आर्य समाजों गुरूकुलों व शिक्षा संस्थानों के को धन्यवाद दिया जिनकी पदाधिकारियों व आर्य जनों की उपस्थिति व एक जुटता के कारण यह आंदोलन सफल हुआ है।

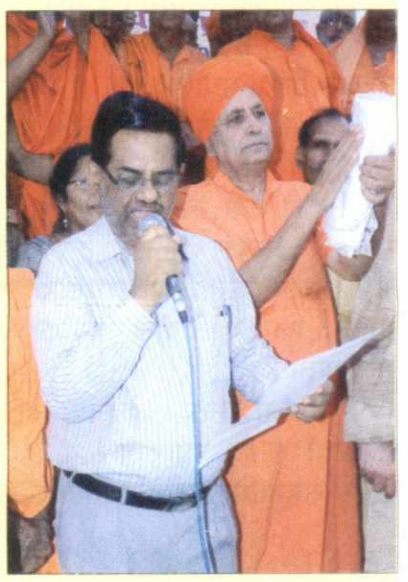

मा. मुख्य मंत्री के प्रतिनिधि को सौंपा ज्ञापन

दोपहर लगभग २:०० बजे मा. मुख्य मंत्री द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि (ए.सी.एम.) को आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने आर्य सन्यासीगणों, सभा के समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों, प्रदेश की सभी समाजों व गुरूकुलों, विद्यालयों के आचार्यों, अध्यापकों आदि हजारों आर्य जनों की उपस्थिति में उ.प्र. में पूर्ण शराब बन्दी की मांग को लेकर मा. मुख्यमंत्री उ.प्र. को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा। जिसका उपस्थित जन समुदाय ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

मा. मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि ने आश्वस्त किया कि आर्य समाज के डेलीगेशन को शीघ्र ही मा. मुख्यमंत्री जी से मिलाया जायेगा ताकि इस समस्या का समाधान हो सके।

वेदामृतम्

कृतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्, एको यासिसत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैः, वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते अस्मे।।

ऋग् १.१६५.३

संसार में हम देखते हैं कि जो जितना अधिक प्रतिष्ठित और महान् होता है, उतने ही अधिक कर्मचारी और सेवक उसके साथ विद्यमान रहते हैं। किसी राजा की जब सवारी निकलती है, तो अमात्य, परामर्शदाता, प्रधान अंगरक्षक, सुरक्षा-सैनिक आदि सैकड़ों लोग आगे-पीछे चलते हैं। परन्तु हे परब्रह्म परमात्मन्। तुम विश्व के महान् चक्रवर्ती सम्राट् होते हुए भी एकाकी विचरते हो, इसमें क्या रहस्य है?क्या तुम्हें अंग रक्षकों और सहायकों की आवश्यकता नहीं है?क्या तुम्हें किसी का भय नहीं है?तुम जो अपने विश्व-साम्राज्य के दौरे करते हो, व्यवस्था देखते हो, समुचित प्रबन्ध करते हो, वह सब तुम अकेले कैसे कर लेते हो?तुम भी प्रदर्शन के लिए ही सही, अपने साथ सैकड़ों अनुचरों को साथ लेकर क्यों नहीं चलते ?नहीं, हम भूल करते हैं। तुम तो 'सत्पति' हो, श्रेष्ठ और विलक्षण रक्षक हो। जो दूसरों की रक्षा करने का सामर्थ्य रखता है, वह अपनी रक्षा के लिए पराश्रित क्यों होगा?तुम्हें किसी का भय नहीं है, कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। अतएव तुम शोभा के साथ एकाकी विचरते हो।

हे महेन्द्र ! तुम सम्राट् हो, हम तुम्हारी प्रजा हैं। तुम हमसे मिलकर प्यार भरे शुभ वचनों से हमारा कुशल-क्षेम पूछते हो, हमारे सुख-दुःख का प्रतिवेदन सुनते हो, हमारे कर्मों एवं आचरणों को देखते हो, सत्कर्मों के लिए हमें उत्साहित करते हो, और जहां कहीं त्रुटि देखते हो उसके सुधार की प्रेरणा करते हो। तुम हरिवान हो, मनोहर गुण-कर्मो- वाले हो। हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमारे प्रति तुम्हारा जो कर्तव्योपदेश है उसे तुम हमें सदा कहते रहो। जब कभी हम कुराह पर चलने लगें, तब तुम मार्ग-दर्शक बनकर हमें कर्तव्य-पथ पर अग्रसर करते रहो। जिसके प्रति हमारा जो कर्तव्य है, वह तुम हमें निर्दिष्ट करते रहो। अन्यथा कुसंगति आदि में पड़कर हम मार्ग-भ्रष्ट हो जायेंगे और न अपना कल्याण कर पायेंगे, न ही जग को कल्याण दे पायेंगे। न ही जग को कल्याण दे पायेंगे। हे राजा होते हुए भी अकेले रहने वाले देवाधिदेव ! हम तुम्हारा ही आश्रय पकड़ना चाहते हैं, क्योंकि वे बड़े लोग भला हमें क्या सहारा दे सकेंगे जो स्वयं अपनी रक्षा के लिए परावलम्बी बने हुए हैं।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

सुलगता कश्मीर

काफी लम्बे समय से चली आ रही कश्मीर की समस्या का कोई सकारात्मक हल निकलता नहीं दिख रहा है। हाँलाकि कश्मीर के पढ़े-लिखे युवा स्वाभिमान व शांति से रहने के इच्छुक हैं जो उन्हें वर्तमान समय में राज्य व केन्द्र की सरकारों से मिलने की उम्मीद शायद नहीं लग रही है।

कश्मीर राज्य के नवयुवक इन पंथों व धर्मों की कट्टरता से ऊब चुके हैं। भारत के ज्यादातर युवा अपना बेहतर भविष्य बनाना चाहते है, इसके लिए वह दुनिया के किसी भी कोने में जाने को तैयार है। उदाहरण के तौर पर गुगल, माइक्रोसाफ्ट, एपल आदि अनेक संस्थानों में भारतीय प्रतिभाओं का लोहा सारा विश्व मानता है। इन प्रबुद्ध युवकों को यदि भारत में ही कार्य करने का अवसर मिलता तो तश्वीर कुछ और ही होती।

भारत के मुस्लिम नवयुवकों की तरह, सीरिया, लेबनान, इराक व लीबिया आदि देशों के नवयुवक वहां के लगातार जारी गृह युद्धों व हमलों आदि से ऊब कर सैकड़ों मील पैदल चलकर, भीख मांग कर यूरोप अमेरिका आदि जाकर शरण लेना चाह रहे हैं। क्योंकि उन्हें वहां अपना भविष्य अन्धकारमय लग रहा है।

कश्मीर समस्या बिना लम्बी भीषण आणविक लड़ाई के हल होगी, शायद सम्भव नहीं दिखती। हांलाकि पाकिस्तान चाहे जितना जोर लगा ले कश्मीर घाटी कभी भी उसका हिस्सा नहीं बन सकती। भारत को पाक अधिकृत कश्मीर भी बिना युद्ध के मिलने वाला नहीं है।

कश्मीर के युवाओं की समस्या बढ़ती जन संख्या के कारण बेरोजगारी है। घाटी में रोजगार के अवसर कम हैं। ओछी राजनीति के कारण कश्मीरी युवा देश से अलग-थलग पड़े हैं उन्हें रोजगार व नौकरियों के अवसर देने से काफी हद तक इसका समाधान हो सकता है। यदि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो कश्मीरी भी अब अपने ही हैं। पाक पोषित आतंक व कश्मीरी अलगावदियों की हिंसक गतिविधियों से समझदार युवा बाहर निकलना चाहता है। अलगाववादियों पर करोड़ों खर्च करके सरकार एक तरह से अब तक बढ़ावा ही दे रही थी। अब नकेल कसने से कोई परिणाम शायद ही निकले।

समय आ गया है कश्मीर पर सभी राजनीतिक दल विचार करके पूर्व में किये गये गलत फैसलों को हटाकर विशेष राज्य की मान्यता समाप्त कर देने में ही समझदारी है।

-सम्पादक

वयोवृद्ध सम्मान एवं श्राद्ध दिवस

नगर आर्य समाज रकाबगंज, लखनऊ द्वारा दिनांक १८ सितम्बर, २०१६ (रविवार) सायं काल ५:३० बजे से रात्रि ८:०० बजे तक वयोवृद्ध सम्मान एवं श्राद्ध दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। तत्पश्चात् रात्रि ८:०० बजे ऋषिभोज का भी आयोजन किया गया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., मुख्यवक्ता-माननीय हरिनाथ तिलहरी जी-सेवा निवृत्त जस्टिस, विशिष्ट अतिथि-श्री मुकेश शर्मा-नगर अध्यक्ष, भ.ज.पा., लखनऊ, उपदेशक-श्री नवनीत निगम, भजन प्रस्तुति-श्री राधेमोहन शर्मा एण्ड पार्टी द्वारा तथा सम्मानित किये जाने वाले आर्यजन श्री बृजेन्द्र निगम, श्री विजय कुमार गुप्ता हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधार कर वैदिक ज्ञान सरोवर को प्रवाहित करने में सहभागिता सुनिश्चित कर अनुग्रहीत करें।

-मंत्री
आर्य समाज रबागंज, लखनऊ

आर्य समाज भोजपुर खेड़ी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भोजपुर खेड़ी वाया किरतपुर जनपद बिजनौर का वार्षिकोत्सव एवं जिला सभा की बैठक दि० २५ सितम्बर, २०१६ को होना निश्चित हुआ है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी एवं अन्य कई विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

मंत्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बिजनौर

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

(प्रश्न) मित्रादि नामों से सखा और इन्द्रादि देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन्हीं का ग्रहण करना चाहिए।

(उत्तर) यहाँ उन का ग्रहण करना योग्य नहीं, क्योंकि जो मनुष्य किसी का मित्र है, वही अन्य का शत्रु और किसी से उदासीन भी देखने में आता है। इससे मुख्यार्थ में सखा आदि का ग्रहण नहीं हो सकता, किन्तु जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इस से भिन्न कोई भी जीव इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता। इसलिये परमात्मा ही का ग्रहण यहाँ होता है। हाँ, गौण अर्थ में मित्रादि शब्द से सुहृदादि मनुष्यों का ग्रहण होता है।

१२. (ञिमिदा स्नेहने) इस धातु से औणादिक 'त्र' प्रत्यय के होने से 'मित्र' शब्द सिद्ध होता है। 'मेद्यति, स्निह्यति सिन्ह्यते वा स मित्रः' जो सब से स्नेह करके और सब को प्रीति करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम मित्र है।

१३. (वृज् वरणे, वर ईप्सायाम्) इन धातुओं से उणादि 'उनन्' प्रत्यय होने से 'वरुण' शब्द सिद्ध होता है। 'यः सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षून्धर्मात्मनो वृणोत्यथवा यः शिष्टैर्मुमुक्षुभिर्धर्मात्मभिर्व्रियते वर्य्यते वा स वरूणः परमेश्वरः' जो आत्मयोगी, विद्वान, मुक्ति की इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकारकर्त्ता, अथवा जो शिष्ट मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है वह ईश्वर 'वरुण' संज्ञक है। अथवा 'वरुणो' नाम वरः श्रेष्ठः इसलिए परमेश्वर सब से श्रेष्ठ है, इसीलिए उस का नाम वरुण है।

१४. (ऋ गतिप्रापणयोः) इस धातु से 'यत्' प्रत्यय करने से 'अर्य्य' शब्द सिद्ध होता है और 'अर्य्य' पूर्वक (माङ् माने) इस धातु से 'कनिन्' प्रत्यय होने से 'अर्य्यमा' शब्द सिद्ध होता है। 'योऽर्य्यान् स्वामिनो न्यायाधीशान् मिमीते मान्यान् करोति सोऽर्यमा' जो सत्य न्याय के करने हारे मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप और पुण्य के फलों का यथावत् सत्य-सत्य नियमकर्ता है, इसी से उस परमेश्वर का नाम 'अर्य्यमा' है।

१५. (इदि परमैश्वर्ये) इस धातु से 'रन्' प्रत्यय करने से इन्द्र शब्द सिद्ध होता है। य इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति स इन्द्रः परमेश्वरः जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे उस परमात्मा का नाम इन्द्र है।

१६. 'बृहत्' शब्दपूर्वक (पा रक्षणे) इस धातु से 'डति' प्रत्यय, बृहत् के तकार का लोप और सुडागम होने से बृहस्पति शब्द सिद्ध होता है। यो बृहतामाकाशादीनां पतिः स्वामी पालयिता स बृहस्पतिः जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है, इस से उस परमेश्वर का नाम बृहस्पति है।

१७. (विष्लृ व्याप्तौ) इस धातु से 'नु' प्रत्यय होकर 'विष्णु' शब्द सिद्ध हुआ है। 'वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत् स विष्णुः' चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है।

१८. 'उरुर्महान् क्रमः पराक्रमो यस्य स उरुक्रमः अनन्त पराक्रमयुक्त होने से परमात्मा का नाम 'उरुक्रम' है। जो परमात्मा (उरुक्रम) महापराक्रमयुक्त (मित्रः) सब का सुहृत् अविरोधी है, वह (शम्) सुखकारक, वह (वरुणः) सर्वोत्तम (शम्) सुखस्वरूप, वह (अर्यमा) (शम्) सुखप्रचारक, वह (इन्द्रः) (शम्) सकल ऐश्वर्यदायक, वह (ब्रहस्पतिः) सब का अधिष्ठाता (शम्) विद्याप्रद और (विष्णुः) जो सब में व्यापक परमेश्वर है, वह (नः) हमारा कल्याणकारक (भवतु) हो।

१९. (वायो ते ब्रह्मणे नमोस्तु) (बृहि वृद्धौ) इन धातुओं से 'ब्रह्म' शब्द सिद्ध हुआ है। जो सबके ऊपर विराजमान सब से बड़ा अनन्तबलयुक्त परमात्मा है, उस ब्रह्म को हम नमस्कार करते हैं। हे परमेश्वर ! (त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि) आप ही अन्तर्यामिरूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हो (त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि) मैं आप ही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा, क्योंकि आप सब जगह में व्याप्त होके सब को नित्य ही प्राप्त हैं (ऋतं वदिष्यामि) जो आपकी वेदस्थ यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं सबके लिए उपदेश और आचरण भी करूंगा, (सत्यं वदिष्यामि) सत्य बोलूँ, सत्य मानूं और सत्य ही करूँगा (तन्मामवतु) सो आप मेरी रक्षा कीजिए (तद्वक्तारमवतु) सो आप मुझ आप्त सत्यवक्ता की रक्षा कीजिए कि जिस से आप की आज्ञा में मेरी बुद्धि स्थिर होकर, विरुद्ध कभी न हो। क्योंकि जो आपकी आज्ञा है, वही धर्म और जो विरुद्ध, वही अधर्म है। अवतु मामवतु वक्तारम् यह दूसरी वार पाठ अधिकार्थ के लिये है। जैसे कश्चित् कञ्चित प्रति वदति त्वं ग्रामं गच्छ गच्छ इसमें दो वार क्रिया के उच्चारण से तू शीघ्र ही ग्राम को जा ऐसा सिद्ध होता है। ऐसे ही यहाँ कि आप मेरी अवश्य रक्षा करो अर्थात् धर्म में सुनिश्चित और अधर्म से घृणा सदा करूँ, ऐसी कृपा मुझ पर कीजिए। मैं आपका बड़ा उपकार मानूँगा।

(ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः) इस में तीन वार शान्तिपाठ का यह प्रयोजन है कि त्रिविध ताप अर्थात् इस संसार में तीन प्रकार दुःख हैं - एक आध्यात्मिक जो आत्मा शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ादि होते हैं। दूसरा आधिभौतिक जो शत्रु, व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है। तीसरा आधिदैविक अर्थात् जो अतिवृष्टि, अतिशील, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। इन तीन प्रकार के क्लेशों से आप हम लोगों को दूर करके कल्याणकारक कर्मो में सदा प्रवृत्त रखिए। क्योंकि आप ही कल्याणस्वरूप, सब संसार के कल्याणकर्त्ता और धार्मिक मुमुक्षुओं को कल्याण के दाता हैं। इसलिए आप स्वयम् अपनी करुणा से सब जीवों के हृदय में प्रकाशित हो जाए कि जिससे सब जीव धर्म का आचरण और अधर्म को छोड़ के परमानन्द को प्राप्त हों और दुःखों से पृथक रहें।

क्रमशः अगले अंक में.....

६३वें वेद प्रचार सप्ताह के समापन व पूर्णाहूति पर कार्यक्रम

''हे परमपिता परमात्मा तुम गुणों की खान हो, तुम अनादि तुम अनन्त तुम पूर्ण महान हो, कौन ऐसा कर्म है जो तुमसे छिपाया जा सके। सभी जगह कण-कण में तुम विद्यमान हो''
हवन कराने से घर में शांति आ जाती है।

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में ६३वें वेद प्रचार सप्ताह के समापन महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें ७६ जोड़े पति-पत्नी ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त अन्य श्रद्धालुओं ने भी भाग लिया। आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने सभी ऋद्धालुओं को केवल ईश्वर पर ध्यान एकाग्र करने को कहा। दुनिया के वातावरण से तनावमुक्त होकर ईश्वर पर ध्यान केन्द्रित करना और कहना ''हे वेद ज्ञान के उपदेष्ठा हमें हमारे हाथों में बल, मस्तिष्क में उत्तम विचार दीजिए। हमारा हृदय विशाल हो।

वेद विदुषी वैशाली ने भजनो के माध्यम से कहा - हे परमपिता परमात्मा तुम गुणों की खान हो, तुम अनादि तुम अनन्त तुम पूर्ण महान हो, कौन ऐसा कर्म है जो तुमसे छिपाया जा सके। सभी जगह कण-कण में तुम विद्यमान हो। आचार्य जी ने कहा हवन कराने से घर में शांति आ जाती है।

शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद वैदिक विद्वान आनन्द पुरुषार्थी जी ने दिया। उपस्थिति निम्न रही अंगद सिंह, रमेश राजा, ओम प्रकाश आर्य, रश्मि गर्ग, शोभा आर्या, रमा आर्या, सुरेन्द्र चौहान, रघुवीर कौर, शांति देवी, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शोभा आर्या, रोशनलाल, देवेन्द्र आर्य, रविन्द्र आर्या, अनिल मारवाह, विजय कुमार गुप्ता, सुमन गुप्ता, आशारानी, कलावती, सविता आर्या, मास्टर सोमदत्त आर्य, मीना वर्मा, डा० प्रदीप मित्तल, डा० राजवीर सिंह वर्मा, जितेन्द्र सिंह, प्रतिभा मित्तल, रामकिशोर सैनी, किशनलाल शर्मा, अनिता आर्या, राजकुमार आर्य, मनीराम सैनी, वेदभूषण अजय सिंह तोमर, मूलचन्द यादव, सुरेश उपाध्याय, विनोद गुप्ता, यशपाल सिंह पुण्डीर, सुधीर कुमार एडवोकेट, मनोरमा सिंह, वेदभूषण, विनोद आर्य आदि रहे।

मंत्री - रविकांत राणा

www.thearyasamaj.org

स्वच्छ भारत अभियान को सफल करना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य

धर्म व संस्कृति की दृष्टि से भारत संसार का सबसे प्राचीन देश है। धर्म व संस्कृति में आध्यात्मिक उन्नति के साथ भौतिक उन्नति सम्मिलित होती है। महर्षि पतंजलि के योग दर्शन में आध्यात्मिक व धार्मिक मनुष्यों को 5 यम और 5 नियमों का पालन करने का विधान किया गया है। 5 नियम हैं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान। प्रथम स्थान पर शौच शब्द है जिसका अर्थ होता कि मनुष्य के जीवन में आन्तरिक और बाहरी स्वच्छता। यदि मनुष्य का शरीर अन्दर व बाहर से पवित्र व स्वच्छ नहीं होगा तो सबसे अन्य विषयों सहित सबसे सूक्ष्म विषय व सत्ता ईश्वर को जाना नहीं जा सकता। शौच व स्वच्छता का पालन करने के साथ अध्ययन आदि करने से मनुष्य संसार के प्रत्येक विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है और अस्वच्छता के संस्कार, प्रकृति व स्वभाव होने पर वह शारीरिक व बौद्धिक उन्नति नहीं कर सकता। बौद्धिक उन्नति के लिए स्वच्छता के साथ स्वाध्याय अर्थात् सच्चे ज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन भी अनिवार्य है। आजकल यह ज्ञान मनुष्य स्कूलों व विद्यालयों में अपने गुरुओं व पुस्तकों से प्राप्त करते हैं। प्राचीन काल में यह ज्ञान गुरुकुल रूपी विद्यालयों में आचार्यों व गुरुओं के सान्निध्य में रहकर भिन्न भिन्न विषयों के शास्त्रीय ग्रन्थों से करते थे जिसमें सभी भौतिक व आध्यात्मिक विषय सम्मिलित होते थे।

प्रत्येक मनुष्य को अपने शरीर की बाहर व अन्दर से तो शुद्धि करनी ही होती है। इसके अन्तर्गत बाहरी शुद्धि में शरीर की स्नान आदि द्वारा शुद्धि के साथ अपना निवास व प्रत्येक वह स्थान होता है जहां वह विचरण करता है, आता–जाता है व काम–धन्धा करता है। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो पर्यावरण में विकार उत्पन्न होगा जिससे उसका शरीर अस्वस्थ हो सकता है। पर्यावरण में हमारी प्राण वायु आक्सीन और जल तथा पृथिवी के सभी पदार्थ सम्मिलित होते हैं। समस्त प्राणी जगत जिसमें पशु व पक्षी आदि भी सम्मिलित हैं, हमारे पर्यावरण का हिस्सा है। अतः हमें शरीर से तो स्वच्छ व स्वस्थ रहना ही है इसके साथ हम जहां भी जायें तो हमें अपने चारों ओर स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिये। यदि हम वातावरण में अस्वच्छता उत्पन्न करेंगे तो हम अपनी प्रकृति व सृष्टि के अपराधी बनते हैं और दूसरों को स्वच्छता का उपदेश करने का हमें कोई नैतिक अधिकार नहीं रहता। यदि हम स्वयं स्वच्छ रहते है और कहीं अस्वच्छता व गन्दगी नहीं करते तो इससे हमें उपदेश देने की भी आवश्यकता नहीं होती। दूसरे लोग हमसे व हमारे कार्य व व्यवहार से प्रभावित होकर स्वयं उसे ग्रहण करते हैं। अतः हमें व सभी लोगों को अपने निजी, सामाजिक व सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता के नियमों का पूर्णतः पालन करना चाहिये जिससे हमारा समस्त पर्यावरण स्वच्छ व शुद्ध हो और इसके परिणामस्वरूप हम व अन्य सभी सुखी व स्वस्थ रह सकें।

स्वच्छता का यह भी आशय है कि हम जिन पदार्थों का घर में व बाहर उपयोग करते हैं उससे उत्पन्न कचरे को यत्र–तत्र न फेंके व बिखेरें अपितु उन्हें एक निश्चित स्थान पर ही फेंके। ऐसा करने से सर्वत्र स्वच्छता दिखाई देने से मन में प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है जिससे मनुष्य सुख का अनुभव करता है। इस सम्बन्ध में यदि हम अपने देश वासियों को देखें तो वह स्वच्छता के नियमों का पालन करते हुए दिखाई नहीं देते हैं। रेलगाड़ी हो या बस अड्डा या बाजार, हम उपयोग की जहां से जो भी चीज लेते हैं उसका उपयोग कर उसके कचरे को प्रायः वहीं अविवेकपूर्वक अस्थान में आसपास फेंक देते हैं। यह आदत अच्छी आदत न होकर बुरी आदत होती है। कचरे को हमें व सभी मनुष्यों को निर्धारित व निश्चित स्थान पर ही फेंकना चाहिये और उसके लिए हमें अमनी आदत व स्वभाव में परिवर्तन करना चाहिये और इसके बारे में अपने व्यवहार व उपदेश दोनों के माध्यम से अपने परिचित बन्धुओं को प्रेरित करना चाहिये। यदि हम ऐसा करते हैं तो इससे भी स्वच्छ भारत के अभियान को बढ़ावा मिलता है। यदि हम स्वच्छता से जुड़ी छोटी–छोटी बातों को जान लें और उसका पालन करें तो इससे न केवल हमें व अन्य लोगों को लाभ होगा अपितु तभी हम सभ्य मनुष्य कहलाने के अधिकारी हो सकेंगे।

आजकल देखने में आता है कि लोग पोलीथीन व अन्य प्रकार के थैलों व थैलियों का प्रयोग करते हैं जिसे वह आवश्यकता न होने पर जहां तहां फेंक देते हैं। इससे वातावरण तो अस्वच्छ वा दूषित होता ही है अपितु उसके परिणाम भी भयंकर होते हैं। प्रायः देखा गया है कि सड़कों पर विचरण करने वाली गायें उन्हें खां लेती हैं जो उनके उदर में जाकर उनकी मृत्यु तक का कारण बनता हैं। इसी प्रकार से इन पोलीथीन की थैलियों को हमारे सफाई कर्मचारी भी कई बार आस पास की नालियों व ड्रेनों में डाल देते हैं जिससे वर्षा होने पर जल की निकासी नहीं हो पाती और सड़कों पर पानी भर जाता है जिस कारण देश की राजधानी सहित अनेक स्थानों पर जल भराव हो जाता है और वाहनों तथा पैदल यात्रियों की आवाजाही में बाधा आती है। इसका एक ही उपाय है कि हम नालियों व ड्रेनेज सिस्टम को कचरे से मुक्त रखें तभी इन व ऐसी अनेक समस्याओं से बचा जा सकता है।

स्वच्छ भारत अभियान में हमें अपने घर, गली मोहल्ले व उसकी सड़कों सहित रेलगाड़ी व बस अड्डे सहित सभी सड़कों आदि को तो कचरे से मुक्त रखना ही है इसके अतिरिक्त हमें यह भी ध्यान देना है कि हम ऐसे कोई काम न करें जिससे हमारी वायु व जल आदि में बिगाड़ व विकार उत्पन्न होता है। यदि हमें वायु व जल शुद्ध नहीं मिलेंगे तो हम स्वस्थ व प्रसन्न नहीं रह सकते। आजकल वायु व जल में भी अनेक प्रकार से प्रदुषण होता है। वायु में वाहनों व बड़े बड़े उद्योगों आदि से तो प्रदुषण होता ही है, इसके साथ हम अपने शरीर से जो प्रश्वास छोड़ते हैं उससे वायु मण्डल में आक्सीजन कम व कार्बन डाइ आक्साईड गैस में वृद्धि होती है। वायु के अशुद्ध होने पर वर्षा के जल में यह अशुद्ध गैसे घुल जाती हैं जिससे हमारे किसानों के खेतों की जो सिंचाई होती है उससे उत्पन्न खद्यान्न भी इन दूषित पदार्थों से दोषयुक्त हो जाते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों ने वायु शुद्धि के लिए अग्निहोत्र व यज्ञ का एक विधान किया था जिसे सभी परिवार प्रतिदिन प्रातः व सायं काल में करते थे। अग्निहोत्र में गोघृत व अन्य पदार्थों के जलने से समस्त वायु मण्डल शुद्ध होने के साथ वायु के किटाणुओं के नाश सहित स्वास्थ्य लाभ व साध्य व असाध्य रोगों के निवारण में भी सहायता मिलती है। यज्ञ से शुद्ध वायु से वर्षा का जल भी शुद्ध होता है जिससे खाद्यन्न भी शुद्ध उत्पन्न होता है। अतः हमें स्वच्छता पर विचार करते हुए यज्ञ व अग्निहोत्र के महत्व पर भी ध्यान देना चाहिये क्योंकि यह हमारे जीवन में उपयोगी व लाभ पहुचाने का काम करता है।

संक्षेप में हम यही कहेंगे कि स्वच्छता व शौच भी हमारे घर्म व कर्तव्यों का एक आवश्यक अंग है। यदि हम इसका पालन करेंगे तो इससे हमें विविध व अनेकानेक लाभ होंगे और यदि नहीं करेंगे तो इसके कुपरिणाम भी हमें व भावी पीढ़ियों को भोगने होंगे। समय पर सावधान होकर जाग जाना व अपने कर्तव्य का पालन करना ही मनुष्य को प्रशंसा व प्रसन्नता प्रदान करता व कराता है। आओं, अपने जीवन में स्वच्छता को अपना मुख्य कर्तव्य बनायें। स्वयं सुधरे और दूसरों को भी सुधारने का प्रयत्न करें। इसी में व्यक्ति, समाज व देश का कल्याण व लाभ निहित है। यदि हमारा देश स्वच्छ होगा तो हम विदेशों में अपनी बिगड़ी छवि को भी सुधार सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता अभियान का शुभारम्भ कर एक प्रशंसनीय कार्य किया है जिसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। इनके इस स्वप्न व अभियान को साकार करना सभी देश वासियों का नैतिक कर्तव्य है।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

आर्य समाज राजाजीपुरम् का वार्षिकोत्सव व श्राद्ध दिवस

आर्य समाज राजाजीपुरम्, लखनऊ का वेद प्रचार कार्यक्रम एवं वार्षिकत्सव व श्राद्ध दिवस दि० १६ सितम्बर से २५ सितम्बर, २०१६ तक मनाया जायेगा।

कार्यक्रम में दि० १६ सितम्बर से २२ सितम्बर, २०१६ को वेद प्रचार के क्रम में प्रातः ५:०० बजे से ६:४५ तक प्रभात फेरी व भिन्न-भिन्न परिवारों में आचार्य पं० संतोष वेदालंकार, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री व पं० अखिलेश कुमार लखनवी के ब्रह्मत्व में यज्ञ, भजन व उपदेश होगें। दि० २३ व २४ सितम्बर, २०१६ को वेद मन्दिर आर्य समाज सेक्टर-डी पुल के पास प्रातः ७:३० से ११:२० तक ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ भजन व प्रवचन तथा सायं ५:३० से रात ८:३० तक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ भजन, प्रवचन आदि होंगे।

दिनांक २५ सितम्बर, २०१६ को प्रातः ७:०० बजे से दोपहर १२:२५ तक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भजन, पितरो का श्राद्ध, सम्मान, प्रवचन व ऋषि भोज आदि का आयोजन किया गया है।

उत्सव में डा० शिवदत्त पाण्डेय (सुल्तानपुर) श्री कुलदीप विद्यार्थी (भजनोपदेशक बिजनौर) आदि पधार रहे हैं।

अस्तु, सभी आर्य नर-नारी उक्त कार्यक्रम में पधार कर आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार में सहभागी बनें।

मंत्री
आर्य समाज राजाजीपुरम्, लखनऊ

पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय 06 सितम्बर, 2016 को जन्म तिथि के अवसर पर

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त महान दार्शनिक वैदिक संस्कृति के गहन अध्येता एवं आर्य सिद्धान्तों के अप्रतिम लेखक पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म ऐटा जिले के नजरई ग्राम में ०६ सितम्बर १८८१ में हुआ था। बाल्यकाल में ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। माता जी के सानिध्य में उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। वैदिक आश्रम में आपके साथ मुंशी प्रेम चन्द्र पढ़े थे। दोनों का सुधारवादी दृष्टिकोण था कालान्तर में महर्षि दयानन्द के वे अनन्य भक्त बने और आर्य जगत के अप्रतिम लेखक के रूप में तथा मुंशी प्रेम चन्द्र हिन्दी जगत के उपन्यास सम्राट के रूप में प्रस्थापित हुये। आपने अंग्रेजी और दर्शन शास्त्र में एम०ए० किया था वैदिक संस्कृति के प्राचीन एवं महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के गम्भीर अध्ययन से वे आर्य समाज के सर्वात्मना पोषक बन गये और समस्त जीवन आर्य सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में समर्पित कर दिया और सरकारी नौकरी को छोड़ कर इलाहाबाद में डी०ए०वी० कालेज के प्रधानाचार्य बनना स्वीकार्य किया।

आपका प्रयाग आगमन आर्य समाज के लिये वरदान सिद्ध हुआ आपके प्रयत्नों से ही आर्य समाज चौक का भव्य भवन डी०ए०वी० स्कूल एवं आर्य कन्या पाठशाला का निर्माण हुआ।

आपने वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू में अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। हिन्दी में आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, जीवात्मा, ऐतरेय ब्राह्मण, मीमांसा दर्शन, मनुस्मृति भाष्य, शंकर भाषा लोचन, विधवा विवाह मीमांशा, कर्मफल सिद्धान्त और जीवन चक्र आदि प्रमुख हैं आस्तिकवाद पर आपको मंगला प्रसाद पारितोषिक वैदिक कल्वर पर १६५० में अमृतधारा पुरस्कार सन् १६५१ में कम्युनिज्म पर, १६५२ में ऐतरेय भाष्य पर ओर १६५५ में जीवन चक्र पर उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कार प्रदान किया था। तुलनात्मक साहित्य के रूप में सायण और दयानन्द शंकर रामानुज और दयानन्द, राममोहन राय केशव और दयानन्द, बुद्ध और दयानन्द आपके प्रमुख ग्रन्थ हैं। अंग्रेजी भाषा में फिलास्फी आफ दयानन्द, आई एण्ड माईगाड, सुपरसिटीशन, वरसिप, क्रिश्चियन्टी इन इन्डिया तथा उर्दू में मसावीहुल इस्लाम, फलस्फा आमाल, वारीताला, कोसेकजा, दयानन्द आजम आदि प्रमुख ग्रन्थ हैं संस्कृत में आर्योदय काव्यम, आर्य स्मृति आदि पठनीय ग्रन्थ हैं। आपने सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवादन लाईट ऑफ ट्रूथ किया था। आपके प्रयास से ही सत्यार्थ प्रकाश की वर्मी भाषा में और चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था सन् १६३१ में हिन्दी साहित्य ने आपको दर्शन परिषद में सभापति चुना था। सन् १६४१ से सन् १६४४ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष और १६४६ से १६५१ तक आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री निर्वाचित हुये थे। वैदिक मिशनरी के रूप में १६५० में दक्षिण अफ्रीका में कई मास तक वैदिक संस्कृति की दुनदुभी बजायी थी। सन् १६५१ में वर्मा, थाईलैण्ड, सिंगापुर की आपने धर्म प्रचारार्थ यात्रा की थी। आपकी महती सेवाओं के लिए मथुरा में आयोजित दीक्षा शताब्दी पर २६ दिसम्बर, १६५६ में तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय डा० राजेन्द्र प्रसाद के कर कमलों से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था २५ अगस्त १६६८ में इस महान लेखक का प्रयाग में देहावसान हो गया था।

राधे मोहन, प्रधान

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा दि. 9 सितम्बर, 2016 को लक्ष्मण मेला मैदान में शराब बन्दी आन्दोलन को लेकर दिये गये धरने पर समाचार पत्रों के कुछ अंश

शराबबंदी के लिए आर्य समाज ने दिया धरना

सूबे में पूर्ण शराबबंदी की मांग को लेकर आर्य समाज ने शुक्रवार को लक्ष्मण मेला मैदान में धरना दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर जुटे आर्य समाज के लोगों के साथ स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती ने यज्ञ कर शराबमुक्त प्रदेश की कामना की। इस मौके पर सभा के प्रधान देवेंद्रपाल वर्मा ने कहा कि शराब पीने से परिवार तबाह हो रहे हैं और युवा पीढ़ी नशे का शिकार हो रही है। ऐसे में अब सरकार की जिम्मेदारी है कि वह प्रदेश में शराब व अन्य नशीले पदार्थों का सेवन बंद कराकर ऐसी नीतियां बनाए, जिनसे लोग विकास के रास्ते पर चल सकें।

शराब बंदी के लिए आर्य समाज ने दिया धरना

■ एनबीटी, लखनऊ : आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने प्रदेश में पूर्ण नशाबंदी के लिए शुक्रवार को लक्ष्मण मेला स्थल पर प्रदर्शन किया। इसमें देशभर से सैकड़ों की संख्या में साधु, संत, महिलाओं और स्कूली बच्चों ने भाग लिया। धरने में मुख्य रूप से मथुरा के स्वामी विश्वानंद, उत्तराखंड के स्वामी सोम्यानंद, मुम्बई के यज्ञमुनि, फर्रुखाबाद के राम चन्द्र आर्य, हरिद्वार के वीरेन्द्र पंवार, धीरज सिंह, स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती ने भाग लिया। सभा के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा ने कहा कि प्रदेश में सरकार को शराब से जितनी आय होती है, उससे कहीं ज्यादा इसके रोगियों के उपचार और बढ़ते अपराध से नियंत्रण पर खर्च करना पड़ता है। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान की धारा 47 के अनुसार राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों में लिखा है कि राज्य नशीले पदार्थों की बिक्री और सेवन पर प्रतिबंध लगाए।

नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ। शनिवार, 10 सितम्बर 2016 www.lucknow.nbt.in

शराब बंदी के लिए आर्य समाज ने दिया धरना

■ एनबीटी, लखनऊ : आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने प्रदेश में पूर्ण नशाबंदी के लिए शुक्रवार को लक्ष्मण मेला स्थल पर प्रदर्शन किया। इसमें देशभर से सैकड़ों की संख्या में साधु, संत, महिलाओं और स्कूली बच्चों ने भाग लिया। धरने में मुख्य रूप से मथुरा के स्वामी विश्वानंद, उत्तराखंड के स्वामी सोम्यानंद, मुम्बई के यज्ञमुनि, फर्रुखाबाद के राम चन्द्र आर्य, हरिद्वार के वीरेन्द्र पंवार, धीरज सिंह, स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती ने भाग लिया। सभा के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा ने कहा कि प्रदेश में सरकार को शराब से जितनी आय होती है, उससे कहीं ज्यादा इसके रोगियों के उपचार और बढ़ते अपराध से नियंत्रण पर खर्च करना पड़ता है। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान की धारा 47 के अनुसार राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों में लिखा है कि राज्य नशीले पदार्थों की बिक्री और सेवन पर प्रतिबंध लगाए।

लखनऊ, 10 सितम्बर 2016 दैनिक जागरण 7

शराब मुक्त प्रदेश बनाने की मांग

- लक्ष्मण मेला स्थल पर एक दिवसीय धरना देने जुटे लोग

जागरण संवाददाता, लखनऊ : शराब मुक्त प्रदेश बनाने की मांग को लेकर आर्य समाज के सैकड़ों लोगों ने शुक्रवार को प्रदर्शन कर विरोध जताया। साथ ही स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती के नेतृत्व में वैदिक यज्ञ कर प्रदर्शन की शुरुआत की। जिला प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंप प्रदेश में शराबबंदी लागू करने की अपील की।

आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर विभिन्न जिलों से आए लोगों ने लक्ष्मण मेला स्थल पर डेरा डाल एक दिवसीय धरना दिया। सभा के जिला प्रधान देवेंद्रपाल वर्मा ने धरने का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि शराब के प्रचलन से महिलाएं और बच्चे सर्वाधिक प्रभावित हो रहे हैं, जिनकी कुल संख्या 70 प्रतिशत से है। इसलिए आर्य समाज ने प्रदेश में पूर्ण शराब बंदी की मांग को लेकर जन-जागरण अभियान छेड़ रखा है। धरने में उप प्रधान धीरज सिंह सहित कई लोग उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान

आर्य समाज के लोग सूबे में शराब बिक्री पर प्रतिबंध को लेकर अड़े

शराबबंदी के लिए किया प्रदर्शन

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

सूबे में शराब बंदी की मांग को लेकर शनिवार को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने कलक्ट्रेट में धरना दिया। मुख्यमंत्री के नाम कलक्ट्रेट प्रभारी को ज्ञापन सौंपा।

सभा के पदाधिकारी जिलाधिकारी चैम्बर के सामने फर्श बिछाकर बैठ गए। वक्ताओं ने कहा कि सुप्रसिद्ध समाज सुधारक, समाज की समानता के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। स्थापना काल से ही सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आर्य समाज काम कर रहा है। शराब बिक्री से प्राप्त होने वाले राजस्व की अपेक्षा शराब सेवन से होने वाली दुर्घटनाओं पर अधिक राजस्व व्यय हो रहा है। यह भी बताया गया कि आगामी सात सितम्बर को आर्य समाज से जुड़ी सभी संस्थाएं लखनऊ में धरना प्रदर्शन करेंगी। इस दौरान पूर्व विधायक रामशरण आर्य लहर, लाल, पूर्व पालिकाध्यक्ष रमेश चन्द्र आर्य, डॉ रवि चौधरी, वीना आर्या, सुनीता मिश्रा आदि मौजूद थे।

कलक्ट्रेट में धरना देते जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा से जुड़े लोग। • हिन्दुस्तान

50 से अधिक आर्य समाज के लोग हाथों में झंडे लेकर पहुंचे कलक्ट्रेट

02 घंटे तक चैम्बर में शराबबंदी की मांग को लेकर अड़े रहे

पूर्व विधायक हुए नाराज

धरने के बाद ज्ञापन देने के लिए आर्य समाज के लोगों ने कलक्ट्रेट प्रभारी से धरना स्थल पर आने को कहा। बताया जाता है कि उधर से खबर आई कि उनके चैम्बर में आकर ही ज्ञापन दे दिया जाए। इस पर पूर्व विधायक आर्य रामशरण आर्य बिफर गए। उन्होंने कहा कि सरकारी कर्मियों का धरना हो तो अधिकारी धरना स्थल पर आ जाते हैं। आर्य समाज के लोग सज्जन हैं तो अधिकारी कुछ समझ नहीं रहे हैं। इसके बाद अधिकारी धरना स्थल पर पहुंचे।

स्वतंत्र भारत लखनऊ, शनिवार, 10 सितम्बर 2016 (6) राजधानी

शराब बंदी को लेकर बुलंद की आवाज

लखनऊ (सं)। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के तत्वावधान में शराब पीने से होने वाली हानियों से परिचित कराने के लिए व प्रदेश में शराब बंदी लागू कराने की मांग

आर्य प्रतिनिधि सभा का शराब बंदी को लेकर धरना

को लेकर प्रदेश भर के आर्यों ने शुक्रवार को लक्ष्मण मेला मैदान में धरना दिया। इस धरने में प्रदेश भर के आर्य शराब पीने से आए दिन होने वाली मौतों व परिवारों में भुखमरी की समस्याओं पर चर्चा के लिए एकत्रित हुए तथा साथ में शराब बंदी को लेकर नारे-बाजी की। धरना स्थल पर आर्यों ने शराब की बोतलें तोड़कर धरती में दबा दीं।

सभा के प्रधान ने बताया कि

शराब के विरोध में प्रदर्शन करते आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य

इससे पहले भी वे रैलियां निकालकर लोगों को जागरूक करने का अभियान गाजीपुर से लेकर गाजियाबाद तक चला चुके हैं जिसमें सभी जनपदों के जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को ज्ञापन सौंपा। परन्तु उनके द्वारा कोई भी कदम न उठाए जाने से क्षुब्ध होकर उन्होंने धरना देने की घोषणा कर दी। उन्होंने बताया कि सरकार इसे राजस्व का स्रोत मानकर इसको निरंतर बढ़ावा दे रही है। उन्होंने शराब की हानियां बताते हुए कहा कि समाज में जितनी भी बुराइयां हैं वह सब इसी की देन हैं। घरों में शराब की वजह से अत्याचार होता है जिसे महिलायें चुपचाप सहती रहती हैं। प्रेसवार्ता में पत्रकारों से बातचीत करते हुए देवेन्द्रपाल ने कहा कि शराब से जितना राजस्व होता है उससे कहीं ज्यादा इसके दुःप्रभाव होते हैं। उन्होंने बताया कि आज कल जितनी भी नई-नई बीमारियां लोगों को हो रही हैं, उसका कारण यही है।

उन्होंने बिहार का उदाहरण देते हुए कहा कि अगर हमसे पिछड़ा प्रदेश इस समस्या से उभर सकता है तो यूपी क्यों नहीं। हम इस बुराई को सम्मान के साथ रखे हुए हैं। प्रधान ने युवाओं के बारे में बताते हुए कहा कि आज का युवा बहुत कम आयु में इस समस्या में ग्रस्त है। इससे आगामी पीढ़ी स्वस्थ नहीं होती है फिर वह देश को क्या योगदान देगा। साथ ही बताया कि सरकार चाहे तो जनता से इस विषय में राय भी ले सकती है।

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा दि. 9 सितम्बर, 2016 को लक्ष्मण मेला मैदान में शराब बन्दी आन्दोलन को लेकर दिये गये धरने-प्रदर्शन के कुछ चित्र

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज सीतापुर–बधाई संदेश

आर्य समाज सीतापुर में आज दिनांक ११.६.२०१६ को सत्संग के पश्चात् सभा प्रधान माननीय श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के नेतृत्व में चलाये जा रहे शराब बन्दी आन्दोलन की समीक्षा की गई। सभी सदस्यों ने इस आन्दोलन को ऐतिहासिक बताया। प्रधान चौधरी रणवीर सिंह ने कहा कि प्रदेश स्तर पर यह पहला आन्दोलन आर्य समाज ने किया है। जिसे जनता का अपार समर्थन मिला है। आर्य समाज के कार्यकर्ता शराब बन्दी आन्दोलन का बैनर लेकर जहां भी गये लोगों ने उनका दिल खोलकर स्वागत किया। मीडिया, जनता, शासन व प्रशासन सभी ने इस आन्दोलन की सफलता की कामना की। विशेष रूप से महिलाओं को बहुत बड़ी उम्मीद इस आन्दोलन से हुई कि अब तो शराब अवश्य बन्द हो जायेगी और उनका उत्पीड़न समाप्त हो जायेगा। घर परिवार बर्बाद होने से बच जायेगा। शासन व प्रशासन का भी दूरभाष द्वारा सतत् सहयोग रहा उन्होंने लगातार उत्साहवर्धन किया। जिलाधिकारी महोदय को ज्ञापन देने से पहले की गई स्तुति, प्रार्थना, उपासना व यज्ञ ने सभी के मन को झकझोर कर रख दिया तथा आर्य समाज का यह आन्दोलन सभी के लिए चर्चा का विषय बन गया। मैं यहां आप सबको यह भी बताना चाहता हूँ कि इस पूरे आन्दोलन के एक मात्र प्रेरणा श्रोत, एक मात्र नायक, एक मात्र पथ प्रदर्शक हमारे यशस्वी व कर्मठ प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा रहे जिन्होंने लगातार हमको प्रेरित किया। उन्हीं की प्रेरणा से इस आन्दोलन ने पूरे प्रदेश में आर्य समाज की पहचान बदल दी। मैं उनको आर्य उप प्रतिनिधि सभा, सीतापुर की ओर से बधाई देना चाहता हूँ सभी सदस्यों ने देवेन्द्रपाल वर्मा जिन्दाबाद के नारों के साथ चौधरी जी के प्रस्ताव का समर्थन किया। इस सभा में डॉ. राम औतार आर्य, रामचन्द्र आर्य, डॉ. सतीश भंवर सिंह, रामचन्द्र कुतुब नगर गोपी कृष्ण, यतीन्द्र, ओमकली सिंह, सन्तोष आर्य, बिजेन्द्र आर्य, नेतराम , मा. रमेश हरिनाम, सन्तराम, अजीत आर्य, सुरेश आर्य, नागेन्द्र प्रकाश सिंह, राजेन्द्र यादव राम प्रकाश यादव, रामलखन मिश्र, रतिभान आर्य आदि आर्यों ने भाग लिया तथा सभी ने सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की कर्मठता, दूरदृष्टिता व आर्य समाज को गति देने की भूरि-भूरि प्रसंशा की तथा काफी देर तक उनकी सफलताओं की कामना करते हुए जय घोष हुआ।

मंत्री-आर्य समाज सीतापुर

वैदिक साम्राज्य की स्थापना

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

ईश्वर कृपयात्र कुशलं त्रापि भवतु।

स्वामी सत्यपति जो मेरे गुरू हैं, उनसे मैंने योग, दर्शन, उपनिषद, विधाएं पढ़ीं, जीवन की श्रेय मार्ग पर चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया, उनके सान्निध्य में सैंकड़ों ध्यान शिविर लगाये, अध्यापन किया। पिछले १६ वर्षो से युरोप, अफ्रिका, एशिया, अमेरिका आदि देशों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ प्रतिवर्ष जा रहा हूँ। इस वर्ष यू.एस.ए. में अधिक समय लगाया। इस देश में भारत से आये, हजारों की संख्या में उच्च शिक्षा प्राप्त, धार्मिक आध्यात्मिक संस्कारों से युक्त युवा, विश्व की प्रसिद्ध कम्पनियों में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। इस बार यू.एस.ए. की सिलीकोन वेली (सन जोश) देखने का अवसर मिला जिसमें गूगल, माइक्रोसोफ्ट, एपल, आदि अनेक विशिष्ट संस्थान स्थित हैं जो समस्त विश्व को अपने में समेटे हुवे हैं। इन सब को देखने के बाद दुःख मिश्रित सुख मिला। काश इन प्रबुद्ध युवकों को भारत में ही ऐसा कार्य करने का अवसर मिला होता।

आज अमेरिका आदि पाश्चात्य देश अपनी सम्पत्ति, ऐश्वर्य, शक्ति, बुद्धि के कारण सम्पूर्ण विश्व पर अपना वर्चस्व बनाये हुवे हैं इसका कारण इन लोगों की दूरदर्शिता, राष्ट्र भक्ति, परस्पर संगठन, श्रद्धा प्रेम, विश्वास, सहयोग है। उत्साह, साहस, पराक्रम, अनुशासन, आगे बढ़ने की उत्कट इच्छा, कार्यकुशलता आदि गुण हैं। प्राकृतिक संसाधनों की खोज करके उनका समुचित, व्यवस्थित रूप में सदुपयोग करना इनकी विशेषता है। भूमि, धन, सम्पत्ति, सोना, चांदी, हीरे-मोती आदि ऐश्वर्य प्राप्त कराने वाले पदार्थो की खोज में अपने प्रदेशों से निकल पड़े। नितान्त बीहड़ जंगलों, पर्वतों, पठारों, मरुस्थलों, नदियों, समुद्रों में मासों वर्षो तक सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, आंधी, तूफान आदि अत्यन्त प्रतिकूलताओं को सहन करते हुवे, यहां तक कि मृत्यु से प्रतिपल जूझते हुवे, नये नये प्रदेशों को ढूंढ़ा, वहां के लोगों से युद्ध किया, उनको भगाया मारा। और अपना साम्राज्य स्थापित किया। वहां के अधिकारी स्वामी बन बैठे।

संसार में एक नियम प्रसिद्ध है जिसे योग्यतम की जीत नाम से जाना जाता है। इसका भावार्थ यह है कि जो सशक्त समर्थ साहसी साधन सम्पन्न है वह विजयी होता है और जो निर्बल, निर्बुद्धि, भीरू, कायर रोगी, असंगठित है वह पराजित हो जाता है। महाभारत के युद्ध के हजारों वर्षो बाद तक यह आर्यावर्त सोने की चिड़िया पारस मणि विश्व गुरू कहलाने वाला देश अंधविश्वास पाखण्ड अहंकार ईर्ष्या-द्वेष, विगठन, निर्बलता, जड़ पूजा आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त हो गया। परिणाम स्वरूप विदेशी आक्रान्ताओं ने इस पर लगातार आक्रमण किये। इतिहास बताता है कि कुछ तो आक्रान्ता इतने क्रूर, आसुरी, पैशाचिक वृत्ति वाले थे जिनके अत्याचारों को पढ़, सुन जानकार हृदय कांप जाता है, शरीर रोमाचिंत हो जाता है मन में आक्रोश विद्वेष, प्रतिशोध की भावना बन जाती है। उनमें से गजनी, चंगेज, खिलजी, नादिर, तैमूर, कासीम, सिकंदर आदि के नाम प्रसिद्ध हैं, किन्तु आज इनके नाम तथा इतिहास को नितान्त हटा दिया गया है।

किसी भी राज्य में दीर्घ कालीन, शान्ति, सुख, ऐश्वर्य मनुष्यों का कर्मण्य, आलसी, प्रमादी, अहंकारी, स्वेच्छाचारी, कुव्यसनी बना देते हैं। इन्हीं न्यूनताओं, दोषों के कारण भारत पर सैकड़ों वर्षो तक शकों, हुणों, मुगलों, पठानों, तुर्को, आदि के आक्रमण होते रहे, सम्पत्ति लूट कर ले जाते रहे, बाद में ये लोग, यहीं रह कर राजा बन गये। इन्हीं विदेशी आकान्ताओं की पराधीनता, अन्याय, अत्याचार, अपमान शोषण, घृणा, पक्षपात पूर्वक क्रूर व्यवहार के कारण भारतीयों की अस्मिता स्वाभिमान, गौरव, शौर्य, उत्साह, साहस, पराक्रम आदि विशिष्ट गुण दब गये, नष्ट हो गये, विस्मृत हो गये और परिणाम स्वरूप भारतीयों में कायरता, भीरूता, झूठ, छल, कपट, स्वार्थ, विश्वास-घात अकर्मण्यता, धोखा, रिश्वत, अंधविश्वास, जड़ पूजा, व्यक्ति पूजा आदि दुर्गण उत्पन्न हो गये जो आज तक परम्परा से चले आ रहे हैं यह सब गुलामी के प्रभाव और परिणामों से हुआ। इसी कारण आज सारे विश्व में भारत की अस्मिता, वर्चस्व, महत्ता, कीर्ति, प्रतिष्ठा सब समाप्त प्रायः हो गये हैं। इतना होने पर भी हम सतर्क सावधान नहीं हो पा रहे हैं।

ये आसुरी शक्तियां आज सीरिया या अफगानिस्तान में ही नही है बल्कि देश के प्रत्येक प्रान्त व नगर में भी छिपी बैठी हैं। यदि हम इनको नष्ट करने के लिए योजनाएं नहीं बनायेंगे, संगठित होकर तन-मन-धन का त्याग नहीं करेंगे, सब प्रकार के साधनों का संग्रह करके प्राणों की बाजी लगाकर इन आतंकवादियों को नष्ट करने का दृढ़ संकल्प नहीं लेंगे तो जो ७००-८०० वर्षो तक हमारे पूर्वजों की दुदर्शा हुई वही सहन करने को तैयार हो जावें। यदि सूक्ष्मता से देखों जाये तो यह प्रतीत होगा कि हम वैदिक दृष्टि से पूर्ण स्वतंत्र हुवे ही नहीं हैं। स्वतंत्रता, संविधान, नीति, विधि-विधान व्यवस्था, प्रबन्ध, शिक्षा न्याय, दण्ड आदि अभी तक अपूर्ण हैं। इन सब में परिवर्तन, परिशोधन परिवर्धन अभी अपेक्षित है। विवाह का अधिकार, सन्तान उत्पत्ति की संख्या मत देने तथा राज्याधिकारी बनने की पात्रता, कर्मकाण्डों का औचित्य अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा, हिंसा की परिभाषा, राष्ट्रभावना, शिष्टता, भद्रता, नैतिकता, सामाजिकता, नागरिकता का स्पष्टीकरण, इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण विषय हैं, जिन पर गंभीरता से चिन्तन करना अतिआवश्यक है।

हे प्रभो! वैदिक विश्व चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना हेतु अब तो माताओं के गर्भो में दिव्य आत्माओं को जन्म धारण काराओ जो गुरुकुलों में जाकर शूरवीर, मेधावी, साहसी, पराक्रमी, वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान बनकर देश-विदेश में अज्ञान अंधकार में भटकते हुवे मानवों को वेद ज्ञान का प्रकाश करें, जिससे सारा विश्व सुख शान्ति, समृद्धि प्रेम से परिपूर्ण हो जाये। हे देव यह गुरुत्तम कार्य आपकी सहायता प्रेरणा के बिना असंभव है अतः हमें तो आप पर ही पूर्ण भरोसा है आप ही अपनी कृपा से यह कार्य सम्पन्न करायेगें इसी भावना, श्रद्धा, विश्वास व आशा के साथ आपका आचार्य ज्ञानेश्वरार्य।

श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज, नई मण्डी मुजफ्फरनगर का श्रावणी पर्व वेद मंत्रों के साथ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के यज्ञमान प्रो० डॉ० सत्यवीर सिंह आर्य सपत्नीक रहे। यज्ञ श्री राकेश कुमार आर्य व श्री मंगत सिंह आर्य जी ने प्रो० डॉ० धीरज कुमार जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न कराया। समारोह में आर्यरत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने क्रमशः विदुषी बहन शान्ति शर्मा, स्वामी शान्तनुजी सरस्वती, श्री ओम प्रकाश शास्त्री ग्राम पचैण्डा, श्री नरेश निर्मल बुढ़ाना तथा श्री रविन्द्र आर्य बुडीना कलां को अंगवस्त्र व सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री प्रो० डा० धीरज कुमार ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री स्वामी योगानन्द सरस्वती ने बताया कि हम सब जनसामान्य को व्रत लेना चाहिए कि वेद, दर्शन शास्त्र, उपनिषद व ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थों का स्वाध्याय निरन्तर करते रहें और अपना व समाज का उपकार करें। इस अवसर पर अन्य महात्माओं-सन्यासियों के उपदेश के साथ ही उपस्थित भजनोपदेशकों के भजन प्रवचन भी हुए। आर्य समाज के प्रधान श्री आनन्द पाल सिंह आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा मंगल कामना की कि समाज में राष्ट्र में वेद शिक्षा का प्रसार हो। भारत को उसका पुराना गौरव प्राप्त हो। श्रावणी पर्व का समापन ऋषि लंगर के साथ हुआ तथा सभी को प्रसाद स्वरूप वैदिक साहित्य भी प्रदान किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आमन्त्रण

नेपाल आर्य समाज ने नेपाल की राजधानी काठमाडौं में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन का निर्णय किया है। इस महासम्मेलन में नेपाल और भारत सहित लगभग २५-३० देश के हजारों आर्यजन सहभागी होंगे।

सम्मेलन में सक्रिय रूप में भाग लेने के लिए आप सादर आमन्त्रित हैं। वैदिक संस्कृति के यथार्थ स्वरूप की प्रस्तुति के साथ ही सामाजिक जागरण, युवावर्ग में चरित्र और सदाचार के भाव की अभिवृद्धि, भौतिक, बौद्धिक और आर्थिक विकास के सम्भावनाओं की खोज आदि सामयिक चिन्तन द्वारा संसार में नई चेतना, उत्साह और प्रेरणा का भाव प्रवाहित करने के उद्देश्य से नेपाल आर्य समाज द्वारा नेपाल की राजधानी काठमांडु में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सहासम्मेलन किया जा रहा है। इस महत्तवपूर्ण अवसर पर देश-विदेश के विशिष्ट विद्वान उपदेशक, सुधारक, शिक्षासेवी, समाजसेवी आदि समाज के विभिन्न क्षेत्र के महत्तवपूर्ण व्यक्तित्वों के साथ सम्पर्क एवं व्यवहारिक उपदेश प्राप्त होंगे।

इस महान् कार्यक्रम में सपरिवार इष्टमित्रों सहित उपस्थित होकर तन-मन-धन एवं कर्म से सहयोग करके पुण्य लाभ प्राप्त करें एवं समुन्नत पवित्र मानव समाज की उन्नति में योगदान करें। इसके लिए आप सबका हार्दिक आह्वान करते हैं।

आयोजक-

नेपाल आर्य समाज

केन्द्रीय कार्यालय टंकप्रसाद मार्ग, वानेश्वर हाइट्स, काठमाडो-१०

दूरभाषः ००५७७-१-४४५२२६५ ईमेलः naryasamaj@yahoo.com

आर्य समाज द्वारा उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराब बंदी की मांग

मुख्यमंत्री श्रीमान अखिलेश यादव को जिलाधिकारी वाराणसी के माध्यम से ज्ञापन सौंपा गया।

दिनांक २० अगस्त, २०१६ दिन शनिवार को काशी आर्य समाज के तत्वाधान में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं की ओर से उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी की मांग मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश से की गयी है। उक्त ज्ञापन जिलाधिकारी वाराणसी के माध्यम से दिया गया है। प्रशासन की ओर से श्रीमान् ए०सी०एम० चतुर्थ ने ज्ञापन लिया।

प्रातः काशी आर्य समाज के प्रांगण में वृहद बुद्धि-शुद्धि यज्ञ किया गया। श्री मोती लाल आर्य ने बुद्धि-शुद्धि यज्ञ किया गया। श्री मोती लाल आर्य ने बुद्धि-शुद्धि यज्ञ सम्पन्न कराया, यज्ञ के उपरान्त प्रदेश सरकार की बुद्धि विवेक शुद्ध करने की प्रार्थना परमेश्वर से की गयी जिससे प्रदेश में शराब बन्दी होकर दुर्घटना अपराध और भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सके। ज्ञापन देने के समय प्रतिनिधि मण्डल में आर्य नेता डा० जय प्रकाश भारती, प्रकाश नारायण शास्त्री, श्रीनाथ सिंह पटेल, डा० विशाल सिंह, पं० ज्ञान प्रकाश आर्य, राजकुमार विश्वकर्मा, धीरेन्द्र आर्य, श्रीमती ज्योत्सना गुप्ता, मोती लाल आर्य, एस.एन प्रसाद तथा रमेश जी आर्य आदि थे।

प्रकाश नारायण शास्त्री - मंत्री

www.thearyasamaj.org

शराब बन्दी आन्दोलन को लेकर दिये गये धरने पर समाचार पत्रों के कुछ अंश

वार और वैंच साप्ताहिक

बीस हजार आर्यजन एकत्रित होकर पूर्ण शराब बन्दी के लिए धरना-प्रदर्शन कर मुख्यमन्त्री को ज्ञापन सौंपेंगे:वर्मा

लखनऊ आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, के प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा ने दावा किया कि आगामी 9 सितम्बर को बीस हजार आर्यजन एकत्रित होकर पूर्ण शराब बन्दी के लिए धरना-प्रदर्शन कर मुख्यमन्त्री को ज्ञापन सौंपेंगे।उन्होने दावा किया कि यह धरना-प्रदर्शन ऐतिहासिक होगा। श्री वर्मा एक खास वार्ता मे बार और बैंच के चीफ एडिटर आरिफ शीश महली से वार्ता कर रहे थे। उन्होने बतायर कि शराब पीने से आये दिन होने वाली मौतों से कई परिवार तवाह हो रहे हैं। इसके साथ ही शराब पीने से कई परिवार भुखमरी के कगार पर पहुँचे गये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, समाज के हित के लिए हमेशा से काम करता चला आ रहा है। चाहे मेडिकल कैम्प लगाना हो या बाढ़ पीडितों की मदद करना हो। हमेशा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के लोग आगे रहे हैं। इसीलिए उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने आन्दोलन छेड़ा है। प्रदेश भर के आर्य लोग 09 सितम्बर,2016 को लक्ष्मण मेला मैदान पर एकत्र होकर शराब बन्दी की मांग उत्तर प्रदेश की सरकार से करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने पूर्ण शराब बन्दी के लिए पहले चरण में रैलियां निकालकर लोगों को जागरूक करने का अभियान चला चुका है यह अभियान गाजीपुर से लेकर गाजियाबाद तक चलाया गया है। अभियान के दौरान शराब से होने वाली बीमारियों एवं उससे जुड़े नुकसान के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए सभाएं भी की गई। यही नहीं प्रशासनिक अमले को ज्ञापन के माध्यम से सचेत भी किया जा चुका है। शराब के प्रचलन से महिलाएं तथा बच्चे सर्वाधिक प्रभावित व पीडित हो रहे हैं, जिनकी कुल जनसंख्या का 70 प्रतिशत है। महिलाएं तथा बच्चे शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन अपवादों को छोड़कर बिल्कुल नहीं करते। उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी की माग को लेकर एक जन-जागरण अभियान/आन्दोलन छेड़ा हुआ है, जिसमें प्रदेश के लोगों में शराब एवं मादक द्रव्यों से दूर रहने के प्रति जागृति फैल रही है। आर्य समाज हमेशा से सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध आन्दोलन करती रही है।

उत्तर प्रदेश भारत का वह अनुपम राज्य है, जहाँ मर्यादा पुरूषोत्तम् श्री रामचन्द्र जी तथा योगीराज श्री कृष्ण जी की जन्म भूमि है, गौतमबुद्ध की तपस्थली तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की कार्य स्थली रही है। यहाँ के लोग परिश्रमी तथा धर्मपरायण एवं मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत है, किन्तु शराब एवं अन्य घातक नशों की तीव्रता से बढ़ती खपत के कारण राम और कृष्ण की भूमिका की सम्पन्नता, सुन्दरता और शान्ति समाप्त होती जा रही है। युवा पीढ़ी में नशे की आदत तेजी से बढ़ रही है, जिससे प्रदेश का भविष्य खतरे में है। यह सर्वविदित है कि जिस व्यक्ति, परिवार या समाज में नशे की आदत पड़ जाती है, वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता। भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ शराब एवं मादक द्रव्यों का सेवन, उत्पादन एवं विक्रय किसी भी दृष्टि से सही नहीं ठहराया जा सकता। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने आजादी से एक वर्ष पूर्व यह संकल्प व्यक्त किया था कि आजादी आने के बाद भारत में पूर्ण शराब बन्दी लागू की जायेगी। हमारे संविधान की धारा-47 में भी राज्य के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि राज्य का यह प्रमुख दायित्व होगा कि वह शराब एवं नशीले पदार्थों के उत्पादन, विक्रय एवं सेवन पर प्रतिबन्ध लगायेगा। दुर्भाग्य की बात है कि सरकार इसे आय का प्रमुख स्रोत बनाकर निरन्तर इसके प्रचलन को बढ़ा रही है, यह संविधान की भावना के विपरीत है। शराब से होने वाली आय से विकास की अवधारणा भी पूरी तरह भ्रान्ति मूलक है। क्योंकि जस्टिस टेकचन्द कमीशन एवं अन्य अनेक सर्वे की रिपोर्ट इस बात का साक्ष्य दे रही है, कि शराब के सेवन से होने वाले आर्थिक नुकसान इससे होने वाली आमदनी से कहीं अधिक है। शराब पीकर वाहन चलाने से जितनी दुर्घटनायें होती हैं, शराब के नशे में जितने लड़ाई व झगड़े होते है, शराब के नशे में ही अधिकतर बलात्कार, हत्याएं एवं मानसिक रूप से जबरदस्त हानि उठानी पड़ती है। भारतीय संविधान के अनुसार राज्य (शासन) एक लोक कल्याणकारी राज्य है। अतः उसकी यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वह शराब एवं अन्य नशों के उत्पादन एवं सेवन को बन्द कराने की ऐसी नीतियां लागू करें, जिनसे लोगों को शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति हो और लोगों को किसी प्रकार की हानि न हो।

चूँकि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अभी तक कोई निर्णय प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी के लिए नहीं लिया गया है, अतः आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक-09 सितम्बर,2016 को लक्ष्मण मेला मैदान में उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं से लगभग 20,000 (बीस हजार) आर्यजन एकत्रित होकर पूर्ण शराब बन्दी के लिए धरना-प्रदर्शन करके मा0 मुख्यमन्त्री जी को ज्ञापन सौंपेंगे।

स्वतंत्र भारत राजधानी

शराब बंदी को लेकर बुलंद की आवाज

लखनऊ (सं.)। आर्य प्रतिनिधि सभा उप्र के तत्वावधान में शराब पीने से होने वाली हानियों से परिचित कराने के लिए व प्रदेश में शराब बंदी लागू कराने की मांग

आर्य प्रतिनिधि सभा का शराब बंदी को लेकर धरना

को लेकर प्रदेश भर के आर्यों ने शुक्रवार को लक्ष्मण मेला मैदान में धरना दिया। इस धरने में प्रदेश भर के आर्य शराब पीने से आए दिन होने वाली मौतों व परिवारों में भुखमरी की समस्याओं पर चर्चा के लिए एकत्रित हुए तथा साथ में शराब बंदी को लेकर रैली भी की। धरना स्थल पर आर्यों ने शराब की बोतलें तोड़कर होली में समा दीं।

सभा के प्रधान ने बताया कि इससे पहले भी वे रैलियां निकालकर लोगों को जागरूक करने का अभियान गाजीपुर से लेकर गाजियाबाद तक चला चुके हैं जिसमें सभी जनपदों के जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को ज्ञापन सौंपा। परन्तु उनके द्वारा कोई भी कदम न उठाए जाने से क्षुब्ध होकर उन्होंने धरना देने की घोषणा कर दी। उन्होंने बताया कि सरकार इसे राजस्व का स्रोत मानकर इसका निरन्तर बढ़ावा कर रही है। उन्होंने शराब की हानियां बताते हुए कहा कि समाज में जितनी भी बुराइयां हैं वह सब इसी की देन है। घरों में शराब की वजह से अत्याचार होता है जिसे महिलायें चुपचाप सहती रहती हैं। प्रेसवार्ता में पत्रकारों से बातचीत करते हुए देवेन्द्रपाल ने कहा कि शराब से जितना राजस्व होता है उससे कहीं ज्यादा इसके दुःप्रभाव होते हैं। उन्होंने बताया कि आज कल जितनी भी नई-नई बीमारियां लोगों को हो रही हैं,उसका कारण यही है।

शराब के विरोध में प्रदर्शन करते आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य

उन्होंने बिहार का उदाहरण देते हुए कहा कि अगर हमसे पिछड़ा प्रदेश इस समस्या से उभर सकता है तो यूपी क्यों नहीं। हम इस बुराई को सम्मान के साथ रखे हुए हैं। प्रधान ने युवाओं के बारे में बताते हुए कहा कि आज का युवा बहुत कम आयु में इस समस्या में ग्रस्त है। इससे आगामी पीढ़ी स्वस्थ नहीं होती है फिर वह देश को क्या योगदान देगा। साथ ही बताया कि सरकार चाहे तो जनता से इस विषय में राय भी ले सकती है।

सत्य सनातन वैदिक धर्म ही सर्वश्रेष्ठ

सब धर्मो में सर्वश्रेष्ठ है, सत्य सनातन वैदिक धर्म हमारा।
जो-जो औरों में गुण मिलते हैं, है लिया हुआ हम से उधारा।
ईसा गौड़ का मसीहा है, कहता है ईसाई समाज सारा,
मोहम्मद खुदा का पैगम्बर है, मानता मुस्लिम भाई हमारा,
ईश्वर सर्वशक्तिमान है, नहीं चाहिए उसको कोई सहारा,
इसलिए निराधार मसीह, पैगम्बरों का समाप्त हो जाता महत्व सारा.....
सब धर्मो में सर्वश्रेष्ठ है .....
यह धन मेरा नहीं ईश्वर का है, सिखलाता है हमें वेद प्यारा,
इसका त्याग भाव से भोग करो, जिससे सुखी जीवन बने तुम्हारा,
आत्मा अजर, अमर है, कभी नही मरती, सिखलाता गीता-ज्ञान हमारा,
कब्र में पड़े हम नहीं रहते, मिलता हमें कर्मानुसार जन्म दुबारा...
सब धर्मो में सर्वश्रेष्ठ है .....
सिर्फ कर्म करना कर्त्तव्य हमारा फल देता ईश्वर न्यारा-न्यारा,
बुरे कर्म करने वाला, चाहे जावे काबा, काशी और हरिद्वारा,
मुक्ति उसे नही मिल सकती, चाहे माला फेरो जीवन सारा,
अच्छे कर्म करने वाला मरने के बाद परम आनन्द पाता, मोक्ष के द्वारा .....
सब धर्मो में सर्वश्रेष्ठ है .....
कहता खुशहाल ''वैदिक धर्म ही, लगता मुझे सब से अधिक प्यारा
सारे विश्व को एक परिवार बतलाता, सिखलाता परस्पर रखना भाईचारा,
इसी धर्म से फल-फूल सकेगा और सुखी बन सकेगा विश्व सारा,
आओं ! मिलकर सभी इसे अपनावें, जिससे पूर्ण हो कृण्वन्तों विश्वमार्यम्
सब धर्मो में सर्वश्रेष्ठ है .....

-खुशहाल चन्द्र आर्य

''भारत माँ की पुकार''

देखते किस ओर माँ ने फिर पुकारा आज है।
लूटते चहुँ दिशि लुटेरे,
पाप का तांडव मचाया।
सिसकियाँ सुनते नहीं,
अबला समझ सब नोंच खाया।।
राष्ट्र ऋण में डूब तन, निद्रा मिले किस काज है?
देखते किस ओर माँ ने, फिर पुकारा आज है।।
अब नहीं यदि जग सके,
तुम कुम्भकर्णी नींद से।
शब्द भी तो खींच लेगें,
ये कुकर्मी जीभ से।
षो रहे विषबेल प्रतिपल, क्या लगे यह ताज है?
देखते किस ओर माँ ने, फिर पुकारा आज है।।
वीर दुर्दिन देख घबराते,
नहीं है मौत से।
बांध के सिर पे कफन,
संकट को झेलें सौख से।।
देश-द्रोही शत्रुओं का बढ़ रहा साम्राज्य है,
देखते किस ओर माँ ने, फिर पुकारा आज है।।
सब नहीं स्वाधीन हो,
बन बेर का छेदन करें।
सब नहीं चौहान सम,
सा लक्ष्य का भेदन करें।।
वीर आर्यो देख लो जन को तुम्हीं पर नाज है,
देखते किस ओर माँ ने, फिर पुकारा आज है।

पं. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

आर्य समाज फजल पुर (बागपत)का 92वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, फजलपुर (सुन्दर नगर) बागपत का ६२वाँ वार्षिकोत्सव भव्य वातावरण के साथ आगामी २३ से २५ सितम्बर, २०१६ को धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। जिसमें प्रातः ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन अपरान्ह १ बजे से ५ बजे तक भजन एवं उपदेश रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक भजन एवं विभिन्न विषयों पर वैदिक विद्वानों के व्याख्यान होंगे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. तथा विनय आर्य मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द, लखनऊ से विमल किशोर आर्य, वैदिक प्रवक्ता, विनोद शास्त्री, आचार्य गजराज शास्त्री, पं. धन कुमार शास्त्री, जयपुर, राजस्थान एवं श्रीमती आचार्या, डॉ. सुनिति आर्या उपदेशिका सर्वश्री सहदेव सिंह बेधड़क, सोमेन्द्र आर्य, चरण सिंह मलिक-भजनोपदेशक भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त आर्य जगत के सन्यासीगण, आर्य नेताओं का भी आगमन होगा।

-विनोद आर्य
मंत्री-आर्य समाज फजलपुर-बागपत

www.thearyasamaj.org

८ | पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र १३ सितम्बर, २०१६ | पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ | एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

"शराब हटाओ-प्रदेश बचाओ आंदोलन की सफलता हेतु कटिबद्ध आर्य समाज"

सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी की पत्रकार वार्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा चलाये जा रहे प्रदेश स्तर पर "शराब हटाओ- प्रदेश बचाओ-- आंदोलन को बुद्धिजीवी वर्ग, महिलाओं, छात्र-छात्राओं तथा जन साधारण का व्यापक समर्थन मिला है। सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने होटल जेमिनी कान्टीनेन्टल लखनऊ में बुलायी गयी प्रेस वार्ता में पत्रकार बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि "आर्य समाज का जन्म ही पाखंड, व सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों आदि से लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था। आर्य समय शुरू से ही इन सबके लिए संघर्ष करता रहा है चाहे वह स्त्रियों की शिक्षा हो, बाल-विवाह हो या अन्य आडम्बर। पिछले दशक से हमारे प्रदेश के नवयुवक शराब व अन्य नशों के आदी होकर अपना भविष्य चौपट कर रहें हैं साथ ही अपराध की दुनिया में भी जा रहे हैं।

विगत दिनों हुए चर्चित बलात्कार के अपराध निर्भया कांड तथा बुलन्दशहर की घटना शराब के सेवन से ही घटित हुई थी। स्वयं अपराधियों ने शराब पीने की बात कबूल की। प्रदेश सरकार इस विषय पर राज्य की आमदनी की दुहाई देती है जबकि सच्चाई इसके उलट है, अपराधिक घटनाओं के नियंत्रण व मुआवजा आदि पर इससे कहीं ज्यादा खर्च हो जाता है। बिहार जैसा पिछड़ा राज्य यदि शराब बन्द कर सकता है, तो उ०प्र० क्यों नहीं ?इसकी सम्पन्नता उससे कहीं अधिक है।

गुजरात में शराब जनित अपराध कम हैं इसका कारण शराब बंदी है। भारत की आबादी के दस प्रतिशत लोग भी शराब का सेवन नहीं करते उ०प्र० में इसका आंकड़ा कुछ ज्यादा है। महिलायें, बच्चे व वृद्धजन तो बिलकुल शराब नही पीते हैं। २० से २५ वर्ष के नवयुवक इस शराब रूपी महामारी से अधिक ग्रसित हैं। उ०प्र० का भावी भविष्य नशे का आदी होकर अपराध व जरायम की दिशा में जा रहा है। शराब के कारण ही लड़ाई-झगड़े, छेड़खानी, लूट व बलात्कार की घटनायें लगभग रोज होती है। पंजाब राज्य के नवजवान आज नशे के कारण ही बरबादी की कगार पर हैं।

पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए सभा प्रधान ने कहा कि सरकार चाहें तो कल उ०प्र० में शराब बन्द करवा सकती है। लेकिन शराब व्यापारियों के सिंडीकेट के दवाब के कारण ठोस कदम नहीं उठा पा रही है।

देश के नवयुवक को वोट/मत देने की उम्र १८ वर्ष है जबकि विवाह की उम्र २१ वर्ष हैं आखिर यह असंतुलन क्यों है ?वोट बैंक के चलते यह उम्र रखी गयी है।

सभा प्रधान में आगे कहा कि आर्य समाज एक सामाजिक सर्वहितकारी संस्था है। संसार का उपकार करना ही इस आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। यदि उ०प्र० सरकार ०६ सितम्बर तक प्रदेश में पूर्ण शराब निषेध नहीं लागू करती है तो आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० शराब बंदी होने तक यह आंदोलन चालू रखेगी।

यदि प्रदेश के चुनाव से पूर्व कोई राजनीतिक पार्टी उ०प्र० में शराबबंदी की घोषणा करती है तो आर्य समाज उसका समर्थन करेगा। उन्होंने सभी पत्रकार बंधओं से इस शराबबंदी आंदोलन में सहयोग देने की अपील की जिससे प्रदेश के जन-जन तक यह आवाज पहुँच सके।

प्रेसवार्ता में आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डा० धीरज सिंह, श्री अजय श्रीवास्तव, डा० भानु प्रकाश आर्य, श्री रवि शास्त्री, श्री संतोष मिश्रा आदि उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा लक्ष्मण मेला मैदान में शराब बन्दी आन्दोलन को लेकर दिये गये धरने-प्रदर्शन के कुछ चित्र

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।